अध्याय चतुर्थ

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

अध्याय-4

प्रदत्तों का विश्लेषण, परिणाम एवं व्याख्या

4.1 प्रस्तावना

संग्रहित प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या शोध प्रक्रिया के आगमन तथा निगमन तर्क के प्रयोग को व्यक्त करना है। स्वनिर्मित परिकल्पनाओं की स्वीकृति तथा अस्वीकृति हेतु प्रदत्तों का समूह व उपसमूह में विभाजन करके विश्लेषण तथा अंतिम परिणाम ज्ञात किया जाता है, जो नवीन सिद्धांत की खोज अथवा सामान्यीकरण के रूप में होता है। प्रदत्तों के विश्लेषण के अंतर्गत उनकी उपलब्धियों की तुलना अनेक परीक्षण करके शोध के उद्देश्यों का निर्णय प्राप्त निश्पत्तियों द्वारा किया जाता है।

प्रदत्तों के विश्लेषण के अभ्यास से प्राप्त परिणाम से प्रदत्तों की व्याख्या करना भोध का मुख्य हिस्सा है। व्याख्या के द्वारा हम एकत्रित प्रदत्तों का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में कर सकते हैं; सांख्यिकीय तथ्यों को अपने आप में कोई उपयुक्तता नहीं होती। एकत्रित प्रदत्तों की उपयोगिता उसकी सही व्याख्या पर निर्भर होती है। विद्यार्थियों के लेखन अशुद्धियों की तालिका परिष्टि में लगाई है।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा परिकल्पाएँ बनाई गयी हैं। इस अध्याय में सर्वप्रथम उद्देश्य एक के लिए प्रतिशत के अनुसार कुल विद्यार्थियों की अशुद्धियों का अध्ययन किया है। अशुद्धियों तथा कारणों के अध्ययन हेतु प्रतिशत की इन प्रविधियों का उपयोग किया गया।

4.2 प्रदत्तों का विश्लेषण :–

उद्देश्य एक के अनुसारः–

1. कक्षा छठवी के विद्यार्थियों के हिन्दी लेखन में वर्तनी संबंधी अशुद्धियों का अध्ययन करना।
2. कक्षा छठवीं के विद्यार्थियों के हिन्दी लेखन में मात्रा संबंधी अशुद्धियॉ, अनुस्वार आदि अनुनासिक संबंधी अशुद्धियॉ, गद्यांश रचना की निम्नलिखित प्रकार की अशुद्धियॉ पायी गई हैं।

1. मात्रा संबंधी अशुद्धियॉं :–

हिन्दी में कुल मिलाकर 11 प्रकार की मात्राएँ होती है, जिसमें – ा, ि, ी, ु, ू, ृ, े, ै, ो, ौ, ं, : आदि विद्यार्थियों के लेखन में मात्रा की अग्रलिखित अशुद्धियॉं पाई गई।

तलिका कमांक–4.1

मात्राओं की अशुद्धियॉं :–

आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
170	200	36	41	36	35	23	74	9	62	28

उपरोक्त टेबल से यह ज्ञात होता है कि 30 या 30 से अधिक अशुद्धियां आ, ई..... में हुई हैं। इन अशुद्धियां का विश्लेषण निम्नानुसार है–

इसमें कुल 21 (84%) विद्यार्थियों ने (44) अशुद्धियां की हैं। इन 25 में से 11 विद्यार्थियों ने 5 या 5 से अधिक अशुद्धियां की हैं। किसी विद्यार्थी की अधिकतम अशुद्धियां 24 थीं।

विश्लेषणः–आ (ा) की मात्रा में 44% विद्यार्थियों ने अशुद्धियां की है जिसे गंभीरता से लिये जाने की आवश्यकता है।

निष्कर्षः– आ (ा) की मात्रा की ओर अत्याधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

1) मात्राओं का लोपः–

विद्यार्थी लेखन करते समय कई बार मात्राओं को लगाना भूल जाते हैं। जैसे कि, उपरोक्त तालिका क्रमांक 4.1 में दिखाया गया है। यह त्रुटि विद्यार्थियों के लेखन में पायी गयी है।

2) अनावश्यक जगह मात्रा लगानाः–

विद्यार्थी प्रायः लेखन करते समय अनावश्यक रूप से जहाँ जरूरत नहीं है, उस जगह पर भी मात्रा लगाते हैं। जैसे कि, उपरोक्त तालिका कमांक 4.1 में दिखाया गया है। यह अशुद्धियाँ विद्यार्थियों के लेखन में पायी गयी है।

3) अशुद्ध मात्राएँः–

विद्यार्थियों द्वारा लेखन करते समय कई बार अशुद्ध मात्राएँ लगाने की भूल हो जाती है। जैसे कि, उपरोक्त तालिका कमांक 4.1 में दिखाया गया है। यह अशुद्धियाँ विद्यार्थियों के लेखन में पायी गयी है।

4) स्थान परिवर्तनः–

विद्यार्थी कभी–कभी लेखन करते समय गलत स्थान पर भी मात्रा लगा देते हैं। जैसे कि, उपरोक्त तालिका कमांक 4.1 में दिखाया गया है। इस प्रकार की अशुद्धियाँ विद्यार्थियों के लेखन में पायी गयी है।

निष्कर्षः–

निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि– मात्राओं का लोप एवं अनावश्यक जगह मात्रा लगाने की ज्यादातर अशुद्धियाँ विद्यार्थियों ने की हैं।